अंधविश्वास को कैसे दूर करें?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

विश्वास करना अच्छा है किन्तु अंधविश्वास करना ठीक नहीं है। जादू–टोना, टोटका, नजर, भूत–प्रेत तथा ऐसी ही अन्य बातों पर विश्वास करना अंधविश्वास है। ऐसा विश्वास अंधविश्वास कहलाता है जिससे हमारी शक्ति क्षीण होती हो। आत्म शक्ति सकारात्मक विचारों से बढ़ती है। समाज में अनेक भ्रान्त धारणाएं फैली रहती हैं, जिन पर विश्वास करके कुछ मनुष्य अपने समय को बर्बाद करते हैं। अंधविश्वास से लोगों को ठगा जाता है। मनुष्य को पुरूषार्थ में विश्वास करना चाहिए, अंधविश्वास में विश्वास नहीं करना चाहिए। कभी–कभी समाज में यह देखा जाता है कि किसी को कोई बिमारी लग गई है तो वह दवा या चिकित्सक के पास न जाकर दुआ या झाड़–फूक पर विश्वास करके नीम–हकीम पर अधिक विश्वास करता हुआ समय को व्यर्थ में गंवा देता है। समय इतना बीत जाता है कि वह व्यक्ति चिकित्सक के पास आते–आते मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। इसलिए अंधविश्वास नहीं करना चाहिए। अंधविश्वास धोखा है।

समाज में कुछ लोग लोगों में भय पैदा करके और अनेक प्रकार का झूंठा प्रलोभन देकर के लोगों को अपने जाल में फंसा लेते हैं। ऐसे लोगों के चंगुल से निकल पाना बड़ा कठिन होता है। कभी–कभी यह भी देखा जाता है कि झाड़–फूक करने वाले लालच देकर, अधिक धन दिलाने का प्रलोभन देकर पुत्र–पुत्रियों की बलि दिलवा देते हैं। ऐसी अवस्था में प्राप्त कुछ नहीं हुआ नुकसान अधिक हो गया। इसलिए वैज्ञानिक सोच रखनी चाहिए। किसी भी बात पर तर्कपूर्वक मंथन करना चाहिए। भूत–प्रेत, झाड़–फूक आदि क्रियाएं निरर्थक है। इस पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। इन क्रियाओं पर जो विश्वास करता है वह अवश्य धोखा खाता है।

अंधविश्वास के चक्कर में अधिकतर स्त्रियां ही फंसती हैं। स्त्रियों को ऐसे समाज के ढ़ोंगी लोग अपने चंगुल में आसानी से फंसा लेते हैं। स्त्रियां उनकी बातों में आकर धोखा खा जाती

हैं। जब तक वो सचेष्ट होती हैं तब तक बहुत नुकसान हो जाता है। इसलिए अंधविश्वास नहीं करना चाहिए और न ही इसे बढ़ावा देना चाहिए। प्राचीनकाल में हमारे देश में अनेक भ्रान्त धारणाएं प्रचलित थीं। आज जब समाज पढ़ा–लिखा हो रहा है तो ऐसी धारणाएं निर्मूल सिद्ध हो रही हैं और समाज से पूरी तरह से अंधविश्वास को हटाया जा रहा है। इस पर विश्वास करने वाले जीवन में धोखा अवश्य खाते हैं। समाज में जो पढ़े–लिखे नहीं होते उन्हीं लोगों में अंधविश्वास अधिक पैदा होता है। कभी–कभी पढ़े–लिखे लोग भी अंधविश्वास के जाल में फंस जाते हैं। ऐसे समाज विरोधी लोगों से बचना चाहिए।

प्राचीनकाल में मनुष्य अनेक क्रियाओं एवं घटनाओं के कारणों को सही ढंग से नहीं जान पाता था। वह अज्ञानवश समझता था कि इसके पीछे कोई अदृश्य शक्ति है। वर्षा, बिजली, रोग, भूकम्प, विपत्ति आदि अज्ञान तथा अज्ञेव देव, भूत–प्रेत और पिशाचों के प्रकोप के परिणाम माने जाते थे। ज्ञान का प्रकाश हो जाने पर भी ऐसे विचार विलीन नहीं हुए। इन्हें अंधविश्वास माने जाने लगा। ज्यों––ज्यों मनुष्यों की क्रियाओं का विस्तार हुआ वैसे–वैसे अंधविश्वासों का जाल भी फैलता गया। अंधविश्वास हर समय समाज में व्याप्त रहा है। अभी तक इसका सर्वथा उच्छेद नहीं हुआ है। भारत में अंधविश्वास की जड़ें बहुत गहरी हो चुकी हैं। मंदिरों और मठों में बड़े–बड़े रोगों को झाड़–फूंक कर ठीक करने का दावा किया जाता है। कई बार स्ट्रिंग ऑपरेशन करके ऐसे दावों की पोल खोली गयी है फिर भी लोगों का विश्वास ऐसे झूंठे बाबाओं के ऊपर बैठा हुआ है वह सहज रूप से उन पर अविश्वास नहीं करते और किसी भी प्रकार की बिमारी होने पर मंदिर, मस्जिद में दौड़े जाते हैं।

जादू, टोना, मणि, ताबीज आदि अंधविश्वास की संतति हैं। इन सबके पीछे कुछ धार्मिक भाव हैं। यह तर्क शून्य हैं। योगिनी, शाकिनी, डाकिनी सम्बन्धी विश्वास भी अंधविश्वास की श्रेणी में आता है। केवल भारत ही नहीं विश्व के अनेक विकसित देशों में भी ऐसी धारणाएं बद्धमूल हैं। लोगों को अब भी विश्वास है कि भूत–प्रेतों को मंत्र के द्वारा वश में किया जाता है। झाड़–फूंक करने वाले दुष्कर एवं विचित्र कार्य करते हैं।

अंधविश्वासों का सर्वसम्मत वर्गीकरण करना सम्भव नहीं है। हमारे देश में यह माना जाता यहै कि पृथ्वी शेषनाग के फन पर स्थित है। वर्षा, गर्जन और बिजली इन्द्रदेव की कृपा से होती

है। भूकम्प की अधिष्ठात्री देवी है। रोगों का कारण भूत–प्रेत और पिशाच हैं। इस प्रकार के अंधविश्वासों को धार्मिक अंधविश्वास कहा जाता है। अंधविश्वास का दूसरा बड़ा वर्ग है मंत्र–तंत्र। रोग निवारण, वशीकरण, उच्चाटन, मारण आदि क्रियाएं समाज में प्रचलित हैं। विविध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मंत्र–तंत्र का प्रयोग आज भी समाज के हर वर्ग में देखा जाता है। अथर्ववेद में जादू–टोना, टोटका, मंत्र–तंत्र आदि क्रियाओं का विस्तार से वर्णन हैं। इसलिए यह सिद्ध होता है कि समाज में बहुत प्राचीनकाल से ये सब क्रियाएं प्रचलित रही हैं। इनके मूल में अशिक्षा ही अधिक है। अंधविश्वास को दूर करने के लिए समाज में जागरूकता और शिक्षा का प्रचार–प्रसार अधिक होना चाहिए। जब समाज शिक्षित होगा तो हर बात का मूल्यांकन तर्क के आधार पर किया जायेगा।